भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एक्सपोर्ट कम्पनी

खरगोश से खुशहाली की ओर

मुर्गी पालन से
आधी लागत दोगुना
मुनाफा 100 %
बदबू रहित

कम लागत
कम मेहनत
अधिक मुनाफा

आपके भरोसे और विश्वास के साथ लगातार
14 साल से देश मे नंबर 1

4 से 5 लाख के निवेश
से 70 से 80 हजार
प्रति महीना कमाएं

कम पूंजी लगाकर
शानदार मुनाफा
घर बैठे...

KISAN Rabbit FARMS

FARMER, BREEDER, STOCKIST, WHOLESALER AND EXPORTER

वापसी खरीद गारेन्टेड
कोर्ट एग्रीमेन्ट
के साथ

9571481888, 9929181888
9636106888, 9936592999

www.kisanrabbitfarms.com

खरगोश पालन

खरगोश पालन क्यो ?

कम निवेश और छोटी जगह में ही खरगोश पालन अधिक आय देता है। खरगोश साधारण खाना खाता है, जिस पर बहुत कम खर्च होता है । खरगोश पालन डेयरी फार्मिंग , मुर्गी पालन , बकरी पालन की तुलना में आसान व्यवसाय है जिसमे समय और मेहनत तुलनात्मक रूप से कम लगते है। खरगोशों की मांग दवा कम्पनियों को दवा परीक्षणों , लैब्स को लैब टेस्टिंग , मेडिकल कॉलेज में मेडिकल के स्टूडेंटस के लिए और टीका संस्थानों के वैक्सीन, टीके बनाने हेतु बहुतायत मात्रा मे होती है । साथ ही इससे उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीनयुक्त मांस उपलब्ध होता है और इसका प्रयोग फर वाले कपड़े , चमड़े की चीजें जैसे मोबाइल कवर , बेल्ट , पर्स, चाबी के छल्ले , दस्ताने , बच्चो के जूते इत्यादि बनाने में भी किया जाता है ।

नोट : किसान रैबिट फार्म अपने किसी भी फार्म के किसी भी खरगोश का प्रयोग मांस हेतु नही करता है। उपरोक्त जानकारी मात्र जानकारी हेतु है ।

खरगोश पालन किसके लिए है ?

भूमिहीन व छोटी जोत के किसानों, अशिक्षित युवाओं और महिलाओं के लिए खरगोश पालन अंशकालिक नौकरी की तरह एक अतिरिक्त आय का साधन बनता है। यदि खरगोश पालन को पूर्णकालिक व्यवसाय के रूप में अपनाए तो बहुत अच्छा मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है।

खरगोश पालन से लाभ ?

खरगोश पालन से कोई भी उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीनयुक्त मांस प्राप्त कर सकता है। खरगोशो को घरों में आसानी से उपलब्ध पत्ते, बची हुई सब्जियां और चने के छिलके , मूंगफली का भूसा आदि खिलाए जा सकते हैं। ब्रॉयलर खरगोशों में वृद्धि दर अत्याधिक उच्च होती है। वे तीन महीने की उम्र में ही 2 किलो तक के हो जाते हैं और औसतन 350 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बिकते हैं। खरगोश में लिटर साईज (बच्चों की संख्या) सबसे अधिक होती है। (औसतन एक मादा 5 से 12 तक बच्चे देती है) विश्व मे भारतीय चिकित्सा संस्थानों और दवा कंपनियों की दवाओं और वैक्सीन की मांग बहुत तेजी से बढ़ रही है क्योंकि भारतीय दवा कंपनियों की दवाओं और वैक्सीन की कीमत अमेरिकी यूरोपियन और अन्य पश्चिमी देशों की दवा कंपनियों के मुकाबले काफी कम है। इन सब दवा कंपनियों और लैब्स को बड़ी मात्रा में खरगोशों की आवश्यकता पड़ती है जिससे खरगोश पालक बहुत अच्छा मुनाफा कमाते है। घरों में पालने के लिए भी खरगोश के बच्चो की बड़ी मांग बाजार में रहती है। इसके मांस की अन्य मांस से तुलना करने पर खरगोश के मीट में उच्च प्रोटीन और वसा होती है इसलिए यह मांस सभी उम्र के लोगों, व्यस्क और बच्चों के साथ साथ हृदय रोगियों, लकवे के मरीजों के लिए भी उपयुक्त है। खरगोश का मांस फैट फ्री मीट माना जाता है और इसको उच्च वसा और उच्च रक्तचाप के रोगी भी खा सकते है जिस कारण इसकी सारे विश्व में बेहद मांग है और यह काफी महंगा बिकता है।

खरगोश की प्रजातियां भारी वजन वाली किस्में।

वाइट जायंट, ग्रे जायंट, फ्लेमिश जायंट, न्यूजीलैंड वाइट, न्यूजीलैंड ब्लेक, सोवियत चिंचिला, डच, न्यूजीलैंड रेड आदि।

खरगोश पालन के तरीके

खरगोश कई तरीके से पाले जा सकते हैं किंतु हम इनमें से पिंजरा प्रणाली अपनाते हैं। खरगोश को खेत , खाली प्लाट इत्यादि के साथ साथ , घर के आंगन में छोटे से शैड से लेकर घर की छत पर शैड बनाकर भी पाला जा सकता है जिसका निर्माण कम निवेश में भी संभव है। खरगोश को मौसमी परिस्थितियां जैसे तेज गर्मी और बरसात से बचाने के लिए शैड बनाना आवश्यक है।

पिंजरा प्रणाली

व्यवसायिक रूप से खरगोश पालन के लिए यही सबसे अच्छी प्रणाली है, किसान रेबिट फार्म में हम अपने किसान मित्रों से इस प्रणाली में खरगोश को रखने के लिए 8/10 फुट लम्बा 3/4 फुट चौड़ा व 1/1.5 फुट ऊँचा पिंजरा बनाया जाता है। जिसमें 1.5/2 वर्ग फुट के बराबर 10 बॉक्स होते हैं। प्रत्येक भाग में एक वयस्क खरगोश को रखा जाता है, हर बॉक्स में खरगोश को दाना पानी देने के लिए कटोरियां लगी होती है जिसमें सुबह शाम दाना पानी डाला जाता है।

खाद्य प्रबंधन

खरगोश सभी प्रकार के अनाज (सोर्गम, बाजारा ,मक्का,जौं,चने के छिलके,मूंगफली की खली और अन्य अनाज) और फलीदार भूसा मजे से खाते हैं। हरा चारा जैसे बरसीम,रिजका, हरी ज्वार, हरा मक्का, घास, पेड़ पौधों की पत्तियॉ, रसोई की बची हुई चीजें जैसे गाजर और गोभी के पत्ते और अन्य सभी सब्जियां आदि इस्तेमाल में न आने वाली चीजें खरगोश बड़े चाव से खाते हैं।

खरगोश के खाद्य प्रबंधन में याद रखने योग्य बिंदु

खाने का निश्चित समय तय होना चाहिए। अक्सर गर्मियों में अधिक तापमान के चलते दिन के समय खरगोश खाना नहीं खाते, लेकिन वे रात में सक्रिय रहते हैं। इसलिए खरगोशों को रात में हरा चारा देना चाहिए क्योंकि वह बर्बाद नहीं जाता। सुबह के समय में ठोस खाना (फीड) दिया जाना चाहिए। यदि फीड रूप में भोजन उपलब्ध न हो, तो मुख्य भोजन (घर पर अनाजों को चक्की में पीसकर बनाये गये) को पानी के साथ मिलाकर उसकी छोटी–छोटी गोलियां बना कर भी खरगोश को दिया जा सकता है। एक खरगोश को एक दिन में 100 ग्राम मुख्य भोजन (फीड) और 200 से 300 ग्राम हरा चारा दिया जा सकता है। खरगोश हरा चारा खाता है। हरे चारे को कभी पिंजरे की फर्श पर नहीं रखना चाहिए, लेकिन उन्हें पिंजरे के किनारे डाला जा सकता है। दिन के किसी भी समय खरगोश को साफ ताजा पानी ही उपलब्ध कराना चाहिए।

खरगोश के प्रकार	अनुमानित वजन	खाद्य राशि/दिन (ग्राम) ठोस खाद्य	हरा पत्ते (ग्राम)
व्यस्क नर खरगोश	1.5/2 कि.ग्रा	100	200/300
व्यस्क मादा खरगोश	1.5/2 कि.ग्रा	100	200/300
स्तनपायी और गर्भवती मादा खरगोश	2/3 कि.ग्रा	100	300/350
छोटे खरगोश	300ग्रा/1 कि.ग्रा	50/75	150/200

खरगोश का प्रजनन प्रबंधन

प्रजनन की उम्र

मादा खरगोश 8 से 10 महीने की उम्र की होनी चाहिए ।

नर खरगोश 10 से 12 महीने (नर खरगोश 8 से 10 महीने की उम्र में ही परिपक्व हो जाते हैं)

किंतु उच्च कोटी के खरगोश की प्राप्ति के लिए प्रजनन के समय उनकी उम्र एक वर्ष की होनी चाहिए।

प्रजनन के लिए खरगोश का चुनाव

व्यस्क शारीरिक वजन को प्राप्त करने के बाद 8–10 महीने की उम्र में खरगोशों का चुनाव किया जा सकता है और मादा खरगोश के प्रजनन के लिए चुनाव उच्च लिटर आकार से होना चाहिए। प्रजनन के लिए स्वस्थ खरगोश का चयन किया जाना चाहिए। स्वस्थ खरगोश सक्रिय होते हैं और आमतौर पर भोजन और पानी लेने के मामले में वे सामान्य होते हैं। इसके अलावा वे अपने शरीर को साफ रखते हैं। स्वस्थ खरगोश के बाल सामान्यतः साफ, मुलायम और चमकीले होते हैं। मादा खरगोशों में उत्तेजक संकेत या ऋतुचक्र (हीट) लक्षणों में कोई विशिष्ट ऋतुचक्र नहीं होता। जब कभी मादा खरगोश नर खरगोश को संभोग के लिए छूट देती है, तभी मादा खरगोश को ऋतुचक्र में नर खरगोश के पास रखा जाता है, यदि मादा खरगोश ऋतुचक्र में नही है तो मादा खरगोश उदासीनता दिखाती है और अपने शरीर के पिछले हिस्से को ऊपर नहीं उठाती है। यदि उसी समय मादा खरगोश उत्तेजक नहीं होती, तो वह पिंजरे के कोने में चली जाती है और नर खरगोश पर हमला कर देती है।

खरगोशों का प्रजनन

प्रजनन के बारे में विस्तृत जानकारी

नर–मादा अनुपात	5:5 या 3:7
पहले संभोग के समय आयु	8–10 महीने। नर खरगोश पहले संभोग के दौरान अच्छे लिटर आकार के आमतौर पर 1 वर्ष के होते हैं।
गर्भकाल	28–31 दिन
दूध छुड़ाने की उम्र	15–20 दिन
किंडलिंग के बाद संभोग समय	किंडलिंग के 10 से 12 दिन या छोटे खरगोशों के दूध छुड़ाने के बाद
बेचने की समय आयु	12 हफ्ते
बेचने के समय वजन	लगभग 1.5 से 2.5 किलो या उससे बड़े

उत्तेजक संकेत देने वाली मादा खरगोश को नर खरगोश के पिंजरे में लाया जाता है। यदि मादा खरगोश ऋतुचक्र

में हो तो वह अपनी पूंछ ऊपर उठाकर नर खरगोश को अपने साथ संभोग करने का आमंत्रण देती है। सफलतापूर्वक संभोग के बाद नर खरगोश एक ओर गिर जाता है और विशेष तरह की चीख जैसी आवाजें निकालता है। एक नर खरगोश का इस्तेमाल सप्ताह में 3 या 4 बार से अधिक के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इसी तरह एक नर खरगोश को दिन में 3 से 4 बार से अधिक प्रजनन के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। प्रजनन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले नर खरगोश को पर्याप्त आराम और अच्छा पोषण दिया जाना चाहिए। एक फार्म में प्रत्येक 7 मादा खरगोशों के लिए 3 नर खरगोश चाहिए। एक या दो नर खरगोश अतिरिक्त पाले जा सकते हैं ताकि यदि प्रजनन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले खरगोश बीमार हो गए, तो उनका इस्तेमाल किया जा सके। ब्रायलर खरगोशों के मामले में गर्भकाल 28 से 31 दिन का होता है। गर्भावस्था का पता प्रजनन के 15 से 18 दिन के बाद मादा खरगोश के पेट को छूकर लगाया जा सकता है। पिछले पैरों के बीच में पेट के हिस्से में स्पर्श करना चाहिए। यदि कोई गोल मटोल चीज ऊंगलीयों के बीच में पकड़ में नही आता है तो पुनः ब्रीडिंग करानी चाहिए । आमतौर पर संभोग के 25 दिन के बाद गर्भवती मादा खरगोशों का वजन 200 से 300 ग्राम बढ़ जाता है। इस बड़े हुए वजन को खरगोशों को उठाकर या तौलकर देखा जा सकता है। यदि गर्भवती मादा खरगोश को नर खरगोश के साथ संभोग करने की छूट दी जाए तो यह ऐसा नहीं करेंगे।

गर्भवती माता की देखभाल

गर्भावस्था का पता लगाने के बाद गर्भवती मादा खरगोश को सामान्य भोजन से 100 से 150 ग्राम अधिक भोजन की मात्रा खिलाई जाना चाहिए। गर्भवती मादा खरगोश को संभोग के बाद 25वें दिन अलग पिंजरे में भेजा जा सकता है या सूखे नारियल के रेशे या धान की पराली का इस्तेमाल गर्भवती मादा के घोंसले में बिछाने की सामग्री के तौर पर किया जा सकता है। गर्भवती मादा खरगोश अपने पेट से बालों को तोड़ देती है और किडलिंग (बच्चे देने) के 1 या 2 दिन पहले नवजात के लिए एक घोंसले का निर्माण करती है। इस समय के दौरान खरगोश को परेशान नहीं किया जाना चाहिए और बाहर से लोगों के पिंजरों के पास आने की छूट नहीं दी जानी चाहिए। आमतौर पर किंडलिंग सुबह जल्दी होती है। सामान्य तौर पर प्रजनन प्रक्रिया 15 से 30 मिनट की अवधि में समाप्त होती है। मां अपने आप को और अपने छोटे बच्चों को सुबह जल्दी ही साफ कर लेती है। नेस्ट बॉक्स की जांच सुबह जल्दी ही कर लेनी चाहिए। यदि कोई मृत बच्चा हो तो ऐसे बच्चे को नेस्ट बॉक्स से तुरंत हटा दिया जाना चाहिए। घोसले की जांच के दौरान मां बैचेन हो सकती है। इसलिए माँ को घोसले की जांच के पहले ही हटा लिया जाना चाहिए।

नवजात खरगोश की देखभाल और प्रबंधन

जन्म के दौरान पैदा हुए खरगोश की आंखें बंद होती है और उनके शरीर पर बाल नहीं होते। सभी नए पैदा हुए खरगोश आमतौर पर घोसले में मादा खरगोश द्वारा बनाए गए बिछोने पर लेटते है । आमतौर पर मां सुबह के समय दिन में

एक बार अपने पैदा हुए बच्चे को दूध पिलाती है। यदि हम मादा खरगोश को बच्चे को दिनभर दूध देने के लिए बाध्य करेंगे तो वह अपना दूध नहीं निकालेगी। आमतौर पर पैदा हुए खरगोशों की त्वचा अपनी मां से प्राप्त दूध की पर्याप्त मात्रा से चमकीली होती है। लेकिन जिन खरगोशों को अपनी मां से पर्याप्त दूध नहीं मिल पाता उनकी त्वचा सूखी होती है और उस पर झुर्रियां दिखाई पड़ती है। और उनके शरीर का तापमान निम्न रहता है एवं वे आलसी दिखाई देते हैं।

सौतेली मां से स्तनपान

आमतौर पर एक मादा खरगोश के 8 से 10 स्तन होते हैं। जब नए पैदा हुए खरगोशो की संख्या स्तनों की संख्या से ज्यादा होती है तो नए पैदा हुए खरगोश पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं प्राप्त कर पाते और उसका परिणाम उनकी मौत के रूप में सामने आता है। दूसरी और अन्य परिस्थिति में जैसे उनकी अच्छी तरह से देखभाल में कमी के कारण भी उनकी मौत संभव है। ऐसे में सौतेली मां का इस्तेमाल नए बच्चे की नर्सिंग के लिए किया जाता है।

सौतेली माता के लिटर द्धबच्चेऋ बदलने के दौरान ध्यान रखने वाले बिंदू..

बदले जाने वाले बच्चों और सौतेली मां के बच्चों के बीच उम्र का अंतर 2 से 3 दिन से ज्यादा नहीं होना चाहिए। 3 से ज्यादा बच्चो को सौतेली माँ से नहीं बदला जाना चाहिए। छोटे खरगोश को घोसले (नेस्ट बॉक्स) में लगभग 2 से 3 सप्ताह तक रखा जाता है। बाद में घोसले को नेस्ट बॉक्स पिंजरे से हटा दिया जाता है । छोटे खरगोशों से 15 से 20 दिन की उम्र में दूध छुड़ाया जा सकता है। दूध छुड़ाते समय पहले मादा खरगोश को किडलिंग पिंजरे से हटाना चाहिए और खरगोशों को उसी पिंजरे में 1 से 2 हफ्ते रखा जाना चाहिए बाद में खरगोशों का लिंग पहचाना जाना चाहिए और फिर अलग–अलग लिंग के खरगोशों को अलग–अलग पिंजरे में रखा जाना चाहिए और अचानक खरगोशों के भोजन में परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

छोटे खरगोशों के मृत्यु दर में कमी

शुरुआती 15 से 20 दिनों तक छोटे खरगोश मां के साथ रहते हैं। इस समय के दौरान केवल माता का दूध पैदा हुए बच्चों के लिए भोजन होता है। 15–20 दिन के बाद छोटे खरगोश पानी और खाना लेने में सक्षम हो जाते हैं। इस समय में वे बिमारियों के प्रति कम प्रतिरोधी होते है। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि छोटे खरगोशों को उबला हुआ ठंडा पानी दिया जाना चाहिए। एक मि.मी. हाइड्रोजन पेरोक्साइड एक लीटर पानी में खरगोशों को उपलब्ध करवायें जाने से 20 मिनट पहले मिलाया जाना चाहिए।

Government of India
Form GST REG-06
[See Rule 10(1)]

Registration Certificate

Registration Number :06BXBPS8965B1Z8

1.	Legal Name	ANAND KUMAR SINGH
2.	Trade Name, if any	KISSAN RABIT FARMS
3.	Constitution of Business	Proprietorship
4.	Address of Principal Place of Business	--, BEHIND GURUDWARA,, VILLAGE BUDA KHERA, Karnal, Haryana, 132001
5.	Date of Liability	
6.	Period of Validity	From 08/08/2017 To NA
7.	Type of Registration	Regular
8.	Particulars of Approving Authority	

Centre Goods and Services Tax Act, 2017

Signature

Name	Baljit Singh Poonia
Designation	Superintendent
Jurisdictional Office	HR121
9. Date of issue of Certificate	08/08/2017

Note: The registration certificate is required to be prominently displayed at all places of business in the State.

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of the application by the jurisdictional tax authority

Government of India
Form GST REG-06
[See Rule 10(1)]

Registration Certificate

Registration Number :06BXBPS8965B1Z8

1.	Legal Name	ANAND KUMAR SINGH
2.	Trade Name, if any	KISSAN RABIT FARMS
3.	Constitution of Business	Proprietorship
4.	Address of Principal Place of Business	--, BEHIND GURUDWARA,, VILLAGE BUDA KHERA, Karnal, Haryana, 132001
5.	Date of Liability	
6.	Period of Validity	From 08/08/2017 To NA
7.	Type of Registration	Regular
8.	Particulars of Approving Authority	

Centre Goods and Services Tax Act, 2017

Signature

Name	Baljit Singh Poonia
Designation	Superintendent
Jurisdictional Office	HR121
9. Date of issue of Certificate	08/08/2017

Note: The registration certificate is required to be prominently displayed at all places of business in the State.

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of the application by the jurisdictional tax authority

Page 1 of 2

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
OFFICE OF JT. DIRECTOR GENERAL OF FOREIGN TRADE
संयुक्त महानिदेशक विदेश व्यापार का कार्यालय
L-482, MODEL TOWN PANIPAT-0

आयातक-निर्यातक कोड (आईईसी) का प्रमाण-पत्र
CERTIFICATE OF IMPORTER-EXPORTER CODE (IEC)
(This is a computer generated certificate. The authenticity of this document may be verified by clicking on 'View Your IEC' link on the website of DGFT i.e http://dgft.gov.in)

1.	नाम/User Name	KISAN RABBIT FARMS
2.	पता/Address	NEAR GURUDWARA,V.P.O. BUDHA KHERA KARNAL KARNAL HARYANA 132001
3.	उस व्यक्ति का नाम व पदनाम जिनका फोटो ग्राफ अपलोड किया गया है|Name and Designation of the signatory applicant whose photograph has been uploaded	ANAND KUMAR SINGH PROP
4.	ब्रांच/डिवीजन/इकाईका पता, यदि कोई हो Address of the Branch/Div./Unit if any	Branches 1) Branch Code : 1 NEAR GURUDWARA,V.P.O. BUDHA KHERA KARNAL KARNAL HARYANA 132001
5.	आईईसी संख्या/IEC Number	**BXBPS8965B**
6.	जारी करने की तिथि/Date Of Issue	30.10.2017
7.	स्थाई खाता सं.(पैन)/PAN	BXBPS8965B

स्थान:/Place :Panipat
दिनांक:/Date :30.10.2017

(HARISH CHANDRA JOSHI)
विदेश व्यापार विकास अधिकारी/Foreign Trade Development Officer

(Issued From File.No./फा0सं0[33/04/130/81606/AM18/] से जारी दिनांक dated 27.10.2017)

टिप्पणी/Note: 1. आईईसी धारक के नाम, पता एवं संविधान में किसी भी परिवर्तन के मामले में आईईसी धारक इसी बीच आनुषंगिक परिवर्तन की तारीख से 90 दिन की अवधि की समाप्ति के बाद आईईसी के मद्दे आयात-निर्यात करने का पात्र नहीं होगा। जब तक ऐसे परिवर्तनों को संबंधित लाईसेंसिंगप्राधिकारी के पास आईईसी में प्रविष्ट करने हेतु प्रस्तुत करेगा/ In case of any change in the Name/Address or Constitution of

http://164.100.78.104:8080/dgftiec/ApplicationStatusDetails.jsp?docCode=HTM/PIECL/1.... 11/7/2017

holder, the IEC holder shall cease to be eligible to Import or Export against the IEC after expiry of 90 days from the date of such a change unless in the meantime, the consequential changes are effected in the IEC by the concerned Licensing Authority.

भारत सरकार/Government of India
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय/Ministry of Commerce & Industry
वाणिज्य विभाग/Department of Commerce
OFFICE OF JT. DIRECTOR GENERAL OF FOREIGN TRADE
संयुक्त महानिदेशक विदेश व्यापार का कार्यालय
L-482, MODEL TOWN PANIPAT-0

सेवा में/To,

मैसर्स/M/s. KISAN RABBIT FARMS
NEAR GURUDWARA,V.P.O. BUDHA KHERA

KARNAL
KARNAL HARYANA 132001

विषय- आयातक-निर्यातक कोड नम्बर आवंटित करना।/Allotment of Importer-Exporter Code Number.

प्रिय महोदय/Dear Gentleman,

आपके आवेदन पत्र के संदर्भ में आपको आयातक-निर्यातक कोड संख्या [BXBPS8965B] आवंटित किया जा रहा है। कृपया इसकी अच्छी तरह जॉच लें। अगर इसमें कोई त्रुटि पाई जाती है तो उसे तत्काल इस कार्यालय के ध्यान में लाया जाए।

With reference to your application you have been allotted Importer-Exporter Code No [BXBPS8965B] Please check it properly. If there is any discrepancy, it may be brought to the notice of this office immediately.

कृपया पावती दें।/Please acknowledge receipt.

भवदीय/Yours faithfully

संलग्न: यथोपरि।
Enclosure: As above

स्थान:/Place :Panipat
दिनांक:/Date :30.10.2017

(HARISH CHANDRA JOSHI)
विदेश व्यापार विकास अधिकारी/Foreign Trade Development Officer

बीमार खरगोश के लक्षण

कमजोर और उदासीन, वजन में कमी और दुर्बलता, बालों का तेजी से गिरना, खरगोशों में किसी सक्रिय गतिविधि का न होना आमतौर पर वे पिंजरे में किसी एक स्थान पर सुस्त पड़े रहते हैं। खाने को कम मात्र में लेना, आंख, नाक , मलद्वार और मुंह से पानी या अन्य किसी चीज का बाहर निकलना ,शारीरिक तापमान और श्वसन दर का बढ़ना।

स्वस्थ खरगोश के लक्षण

स्वस्थ और चमकीले बाल, अत्याधिक सक्रिय , खाने के बाद भी अच्छा और जल्दी से खा लेना आमतौर पर आंखे बिना किसी डिस्चार्ज के चमकीली रहती हैं, उत्साहजनक तरीके से वजन बढ़ना ।

खरगोश को होने वाली बिमारियां

लगातार खांसने और छींकने के दौरान खरगोश अपनी नाक अपने आगे के पैरों से लगातार खुजलाते हैं। अक्सर खरगोश अपने आपको साफ करते रहते है जिससे उनके बाल झड़ते है जो मुह के रास्ते पेट मे जा सकते है ।

चिकित्सीय संकेत

श्वसन के दौरान निकलने वाली आवाज बर्तनों की खड़खड़ाहट जैसी होती है। इसके अलावा इनमें बुखार भी होता है इसके लिए जिम्मेदार सुक्ष्म जीवाणु जो गंदगी व सीलन से पैदा होकर उनकी त्वचा के नीचे पिस्सू पैदा कर देते हैं और उनका गला खराब कर देते हैं।

उपचारः– एंटेराइटिसः खरगोशों में एंटेराइटिस पैदा करने के लिए कई सूक्ष्म जीवाणु जिम्मेदार होते है। इन जीवाणुओं के प्रति खरगोशों को संवेदनशील बनाने में खाने में हुआ अचानक बदलाव, भोजन में कार्बोहाइड्रेट की अत्याधिक मात्रा , प्रतिरोध क्षमता में कमी, अस्वस्थ भोजन आदि जिम्मेदार है। इस बिमारी के चिकित्सकीय संकेतों में हैजा, पेट का आकार बढ़ना, बाल मुरझाना और पानी की कमी है।

नोटः किसान रैबिट फार्म अपने साथ काम करने वाले सभी किसानों को फार्म आरम्भ करते समय पूरी ट्रेनिंग व तकनीकी सहायता व मार्गदर्शन निःशुल्क उपलब्ध कराता है।

छोटे खरगोशों की देखभाल करने वाली माता खरगोश को मासटाईटिस हो सकता है जिससे उसके उदरांग में यह बीमारी होती है और वह लाल और दर्दीला हो जाता है। एंटीबायोटिक देने से इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है।

फंगस के संक्रमण से होने वाली बीमारियां

खरगोशों में त्वचा का संक्रमण डर्मटोपाइसिस फंगस से होता है। कान और नाक के आसपास के बाल की कमी हो जाती है। खुजली के कारण खरगोश लगातार संक्रमित क्षेत्रों में खुजली करते हैं जिससे उस हिस्से में घाव हो जाते हैं।

उपचारः– प्रभावित हिस्सों में ग्रीसियोफुल्विन या बेंजाइल बेंजोएट क्रीम लगानी चाहिए। इस बीमारी के नियंत्रण के लिए भोजन के प्रति किलो 0–75 ग्राम ग्रीसियोफुल्विन मिलाकर दो हफ्तो तक दिया जाना चाहिए।

खरगोश बीमारी नियंत्रित करने हेतु स्वच्छता मानक

खरगोश फार्म ऐसे स्थान पर होने चाहिए जो पर्याप्त हवादार हो। पिंजरे साफ सुथरे होने चाहिए।

खरगोश के फार्म के चारों ओर पेड़ अतिरिक्त लाभदायक हैं। साल में 2 बार सफेदी की जानी चाहिए।

हफ्ते में दो बार पिंजरों के नीचे चूने का पानी छिड़कना चाहिए।

गर्मी के मौसम में गर्मी से होने वाली मौतों को रोकने के लिए खरगोशों पर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।